मोबाईल आधारित शौचालय उपयोगिता की निगरानी प्रणाली

मध्यप्रदेष सरकार की जल एवं स्वच्छता की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न समुदाय आधारित पद्यतियों, योजना निर्माण एवं सेवाओं की गुणवत्ता सुधारने के लिए राज्य सरकार को एमपीटास्ट एवं वाटर एड तकनीकी सहयोग प्रदान करते है। इसके लिए एमपी वॉष कार्यक्रम का संचालन मध्यप्रदेष स्वास्थ्य क्षेत्र सुधार परियोजना (MPHSRP) के अन्तर्गत 16 उच्च प्राथमिकता वाले जिलों में किया जा रहा है।

प्रदेष में शौचालयों के उपयोग की निगरानी के लिए एक मोबाईल आधारित प्रणाली को विकसित किया गया है, यह प्रयोग एमपी वॉष कार्यक्रम के अन्तर्गत स्थानीय स्वयं सेवी संस्था 'समर्थन' के सहयोग से सर्वप्रथम सीहोर के इछावर ब्लॉक में सफलतापूर्ण संचालित किया गया है। इस प्रणाली में इन्टरनेट और जीपीएस द्वारा वास्तविक समय में घर में शौचालय की उपलब्धता एवं उपयोगिता, स्वच्छता की आदतें इत्यादि की जानकारी कुल 70 ग्राम पंचायतों के 25000 घरों से प्राप्त की गई। इस प्रणाली के अंतर्गत मोबाईल से सर्वे होते ही जानकारी सीधे एक निर्धारित सर्वर पर जीपीआरएस, इन्टनेट और वायरलेस द्वारा प्रेषित हो जाती है और केन्द्रिय सर्वर उपलब्ध आंकडों को एकत्रित कर निगरानी रिपोर्ट तैयार करता है। जिसका उपयोग सभी स्तरों पर किया जा सकता है।

यह तंत्र कैसे कार्य करता है–

यह मोबाईल आधारित निगरानी प्रणाली त्रिकोणीय तरीके पर आधारित है, जिसमें प्रथम स्तर पर स्वच्छता दूतों द्वारा मोबाईल के उपयोग से अपने ही गांव के प्रत्येक परिवार की जानकारी एकत्रित की जाती है। स्वच्छता दूत मोबाईल सर्वे में षौचालय की भौतिक उपलब्धता, उसके उपयोग, तथा स्वच्छता की आदतों के साथ षौचालय की फोटो उस की जी.पी.एस. स्थिति इत्यादि जानकारी एकत्रित करते है। दूसरे स्तर पर इस जानकारी को समुदाय के साथ बैठकों के माध्यम से सांझा किया जाता है, ताकि ग्रामीण अपने गांव की स्वच्छता की स्थति को समझ सके। तीसरे स्तर पर पंचायत एवं जनपद पंचायत के सहयोग से जानकारियों के उपयोग से स्वच्छता की योजनाएं, रणनीति एवं प्रयास किये जाते है।

परिवारों के सर्वे की जानकारी गूगल के नक्षे पर जीपीएस स्थिति के आधार पर अंकित की जाती है। प्रत्येक परिवार की जानकारी एक घर के निषान के रूप मे दिखाई जाती है। शौचालय की उपलब्धता एवं उपयोगिता के अनुसार नक्षे पर घरोंकोतीन रंगों में प्रदर्षित किया जाता है। जिसमें हरा रंग उन घरों को दिया जाता है जिनके पास षौचालय उपलब्ध है, पीला रंग ऐसे परिवारों को दर्षाता है कि जिनके षौचालय क्षतिग्रस्त या मरम्मत योग्य हो तथा लाल रंग उन घरों के लिए दर्षाया जाता है जिनके पास षौचालय की उपलब्धता नही है। नक्षे पर रंगों को देखकर गांव की स्वच्छता की स्थिति का अंकलन किया जा सकता है।

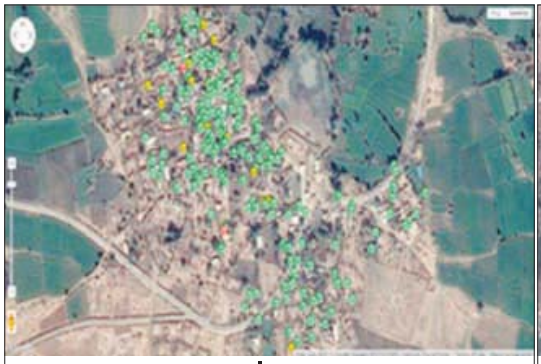

नक्शा ग्राम पंचायत मुण्डला, इछावर

नक्शा ग्राम पंचायत बोरदीकलां, इछावर

परिणाम एवं विश्लेषण–

इस प्रणाली में जानकारी के बेहतर विषलेषण के लिए एक एम.आई.एस., डैष बोर्ड एवं नक्षों का प्रयोग किया जाता है। जिससे स्वच्छता के कई आयमों पर विष्लेषण किया जा सकता है, जैसे ग्राम पंचायत, विकास खण्ड एवं जिला इत्यादि स्तरों पर देखा जा सकता है कि किन गांवों में स्वच्छता की स्थति खराब है या अच्छी है, किन ग्रामों को जल्दी खुले में शौच की आदत से मुक्त किया जा सकता है। क्योंकि यह जाना जा सकता है कि किसी ग्राम पंचायत में कितने परिवारों के पास षौचालय है और उसका उपयोग हो रहा है या नहीं, कितने क्षतिग्रस्त हैं और कितने परिवारों में षौचालय बने ही नही है इत्यादि। यह जानकारी योजना निर्माण, निगरानी और क्रियान्वयन को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी होगी।

इसके अतिरिक्त षौचालय का प्रकार, पानी की उपलब्धता, स्वच्छता की आदतें, ठोस एवं तरल अवषिष्ट के संबंध में भी विष्लेषण किए जा सकते हैं।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत द्वारा त्रैमासिक बैठकों में इसके विष्लेषण के आधार पर समीक्षा की जा सकती है।

प्रमाणित करने की प्रक्रिया–

- समुदाय के द्वारा इन प्राप्त जानकारियों को पुनः विभिन्न सामुदायिक बैठकों में चर्चा कर इसकी विष्वसनीयता एवं गुणवत्ता बेहतर होती है।
- स्वच्छता दूत द्वारा इन बैठकों में षौचालय उपयोग हेतु समुदाय को संवेदित करने का प्रयास करता है।
- पंचायत के साथ–साथ विकास खण्ड अधिकारी भी नक्षे के माध्यम से प्रगति को देख सकते है, साथ ही स्थिति सुधारने के लिये उपयुक्त निर्णय एवं रणनीती का निर्माण कर सकते हैं। इससे निष्चित हीपंचायतों में स्वचछता के सूचकांकों में सुधार होगा।

चुनौतियां–

- आंकडों की गुणवत्ता एवं प्रमाणीकता जानकारी एकत्रित करने वाले के अवलोकन एवं उसकी स्वच्छता की समझ पर निर्भर करतीहै।
- मोबाईल आधारित निगरानी में स्वच्छता दूतों की अहम भूमिका रही है और इसके फॉलो–अप में भी होगी, परन्तु प्रोत्साहन राषि की व्यवस्था सुचारू न होने के अभाव में उनकी रूची बनाये रखना कठिन कार्य है।

सीख एवं सफलताऐं–

- मोबाईल आधारित निगरानी प्रणाली षौचालय निर्माण एवं उपयोगिता संबंधी योजना बनाने एवं उसकी निगरानी हेतु एक प्रभावी तरीका साबित हुआ है।
- इछावर विकास खण्ड में स्वच्छता दूत वॉष कार्यक्रम की स्थिति बेहतर बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
- कोई भी मोबाईल आधारित निगरानी ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता, पंचायत एवं समुदाय के योगदान के बिना गांव को खुले में षौच मुक्त बनाने में सफल नहीं हो सकता।
- यह जानकारी एकत्रित करने का बेहतरतरी का है इसको तीन माह के अंतराल में दोबारा करने से जानकारी की गुणवत्ता बढ़ेगी।

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड